PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रकृति के विविध रंग–सुमित्रानंदन पंत के संग

• साक्षी कुमारी • नेहा सिन्हा • प्रीति कुमारी
• मंजुला सुशीला

Received : November 2018
Accepted : March 2019
Corresponding Author : Manjula Sushila

Abstract : पंत के काव्य में प्रकृति के प्रति अपार प्रेम और कल्पना की ऊँची उड़ान देखने को मिलती है। अपनी विभिन्न कविताओं के माध्यम से प्रकृति के विविध रूप रंगों यथा– चाँदनी, बादल, छाया, ज्योत्स्ना, किरण, प्रात: संध्या, वर्षा, वसंत, नदी, निर्झर, भ्रमर, तितली, पक्षी आदि पर पंत ने स्वतंत्र रूप से कविताएँ लिखी हैं। प्रकृति प्रेम की प्रथम रचना 'वीणा' से लेकर 'लोकायतन' नामक महाकाव्य तक उनका प्राकृतिक परिवेश के प्रति प्रेम पूर्णत: दिखाई देता है। कहीं–कहीं तो पंत ने प्राकृतिक सौंदर्य के सम्मुख नारी सौंदर्य के प्रति आकर्षण को भी न्यून या गौण मान लिया था–

'' छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल–जाल में
कैसे उलझा दूँ मैं लोचन?''

साक्षी कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

नेहा सिन्हा
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

प्रीति कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

मंजुला सुशीला
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : manjula71pwc@gmail.com

उनका प्रत्येक वर्णन मानव हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न करता है। उन्होंने संध्या बेला को एक आकर्षक युवती के रूप में दर्शाया है। 'संध्या' का मानवीकरण कर पंत ने छायावादी काव्य की एक प्रमुख विशेषता को मनमोहक आयाम प्रदान किया है। प्रकृति के सुंदर रूपों के प्रति आकर्षण के कारण ही पंत में मनन–चिंतन की शक्ति आई और वे हिन्दी साहित्य जगत को स्वर्ण काव्य प्रदान कर सके।

संकेत शब्द (Key words) : स्वच्छंद–उड़ान, अटूट–विश्वास, मानव–जीवन, जिज्ञासा, लोकमानस।

भूमिका:

हमने अपने शोध कार्य में पंत की प्रकृति संबंधित विविध कविताओं द्वारा प्रकृति की ओज, सुंदरता एवं आज के संदर्भ में उसकी स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है। प्रकृति आदि काल से मानव की सहचरी रही है। प्रकृति छायावादी कवियों के साथ–साथ रोमांटिक कवियों की भी प्रेरणा रही है। पंत की तुलना पाश्चात्य कवि वर्ड्सवर्थ से की जाती है। इनका व्यक्तिव केवल कविता में है, लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं कि वह सिर्फ कविता की दुनिया में ही साँस लेते हैं। पंत जी में अद्‌भुत सहानुभूति–क्षमता है। जनगण के प्रति उनकी सहानुभूति सतही नहीं है, बल्कि अत्यंत गहरी है। चूँकि हमने अपने शोध–कार्य के लिए पंत के प्रकृति चित्रण को आधार बनाया है अत: इसका परिचय प्राप्त करना आवश्यक है :–